बख्श की काव्य रचनाओं का नारीवादी विश्लेषण

Feministic Analysis Bakhsh's Poetry

एम.फिल.

लघु शोध प्रबंध

सत्र- 2015-16

मार्गदर्शक

प्रो. शंभु गुप्त

स्त्री अध्ययन विभाग

शोधार्थी

पिंकी धारीवाल

पंजी. सं.-2015/03/212/002

स्त्री अध्ययन विभाग, संस्कृति विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा – 442001 (महाराष्ट्र) भारत

बख्श की काव्य रचनाओं का नारीवादी विश्लेषण

अनुक्रमणिका

पृष्ट-संख्या

अध्याय- 1 शोध विषय की रूपरेखा **1-10**

1.1 भूमिका
1.2 साहित्यिक पुनरावलोकन
1.3 शोध प्रश्न
1.4 शोध उद्देश्य
1.5 प्राकल्पना
1.6 शोध क्षेत्र, समय और सीमा
1.7 शोध प्रविधि

अध्याय- 2. **11-22**

पंजाब की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक स्थितियां एंव जेंडर प्रश्न

2.1 पंजाब की स्थिति और जेंडर प्रश्न

2.1.1. लिंगानुपात संबंधी प्रश्न

2.1.2 महिलाओं की शिक्षा, रोजगार संबंधी प्रश्न

2.1.3 विदेशों में पलायन

2.1.4 बढ़ता विधवा प्रतिशत और करवा प्रथा

2.1.5 खाप पंचायतें और उनकी तालीबानी नीतियाँ

2.1.6 परंपरागत स्त्री छवि और पंजाबी विरसा

निष्कर्ष

अध्याय- 3 **23-28**

पंजाबी लोक साहित्य-एक परिचय

अध्याय- 4 **29-35**

बख्श का साहित्यिक योगदान व प्रमुख कृतियों का विवरण

अध्याय- 5 **36-115**

बख्श की काव्य रचनाओं में स्त्री मुद्दे तथा उनका नारीवादी विश्लेषण

5.1 बख्श की कृतियों की विषय-वस्तु का सारांश

5.2 बख्श की काव्य रचनाओं में स्त्री मुद्दे और उनका नारीवादी विश्लेषण एवं प्रतिरोध के स्वर

5.2.1 पुस्तक 'माँ धी दा संवाद (माँ-बेटी के बीच का संवाद)' में रेखांकित किये गए मुद्दे एंव स्त्री प्रतिरोध

5.2.2 पुस्तक 'तुर चानण दी तौर (चल चांदनी की चाल)' और 'सुण नी कुड़ीये जिऊण जोगिए' में रेखांकित किये गए मुद्दे एंव स्त्री प्रतिरोध

अध्याय- 6 **116-131**

बख्श की रचनाओं में दो परिवेशो का सम्मिश्रण, प्रवासी तथा पंजाबी स्त्री की स्थितियों का अध्ययन-जेंडर के संदर्भ में

अध्याय- 7 **132-135**

निष्कर्ष

परिशिष्ट:- 1. साक्षात्कार **136-177**

2. प्रमुख छन्दों का संग्रह (स्त्री मुद्धों से संबंधित)

3. गतिविधियों की सूचनाएँ-चित्र इत्यादि

संदर्भ ग्रंथ सूची **178-181**

अध्याय- 1.

शोध विषय की रूपरेखा

1.1भूमिका
1.2 साहित्यिक पुनरावलोकन
1.3 शोध प्रश्न
1.4 शोध उद्देश्य
1.5 प्राकल्पना
1.6 शोध क्षेत्र, समय और सीमा
1.7 शोध प्रविधि

भूमिका

पंजाबी भाषा और साहित्य में शोध का विषय ज्यादातर पंजाबी काव्य के साथ ही संबंधित है परन्तु अभी तक पंजाबी काव्य को एक निरंतर गतिशील प्रवाह के बाद परवान करके समूचे पंजाबी काव्य का अध्ययन और मूल्याकंन, एक जगह किसी एक विचारधारा को आधार बनाकर पेश नहीं किया गया। इसलिए पंजाबी काव्य को एक अलग दृष्टीकोण द्वारा पेश करने की मेरी इच्छा ने ही मुझे शोध कार्य के लिए विषय "बख्श के काव्य का नारीवादी विश्लेष्ण" चुनने के लिए प्रेरित किया। इच्छा सामाजिक जरूरत के साथ जुड़ी हुई होती है वह निजी हो के भी समाज की अपनी ही जरूरत होती है। इसलिए इस विषय पर कार्य करना पंजाबी साहित्य की भी जरूरत पूरी करना है।

हमारे पास साहित्य एक ऐसा माध्यम है, जिससे हम समाज के अलग-अलग इतिहासिक, सामाजिक और सभ्याचार मनुष्य रूपों के जीवंत रूपों की जानकारी प्राप्त कर सकते है। इसलिए पंजाबी जीवन के इतिहास द्वारा सिरजे गये सामाजिक और सभ्याचार मनुष्य रूपों को जानने के लिए पंजाबी काव्य का यह अध्ययन जरूरी है।

गिद्धा (एक विशेष प्रकार का लोक नृत्य जिसे महिलाएं प्रस्तुत करती हैं) और भंगड़ा (एक विशेष प्रकार का लोक नृत्य जिसे पुरुषों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है) जिसमें पंजाबी जीवन शैली की झलक मिलती है,पंजाब का परंपरागत लोक नृत्य है जिसे करते वक्त स्त्रियाँ अथवा पुरुष सम्मिलित रूप से बोलियां गाते हैं। जिन्हें हम लोकगीतों की तर्ज पर लोक बोलियाँ, टप्पे कह सकते हैं। बोलियों, टप्पो में चार या पांच पंक्तियों की तुकबन्दी होती है।

पंजाब लहलहाते खेतों की संस्कृति का प्रदेश है जिसकी जीवंत संस्कृति हमेशा सबको आकर्षित करती रही है। फिर चाहे वह बॉलीबुड हो या अन्य कोई प्रसंग पंजाब हमेशा सबके लिए आकर्षण का केंद्र रहा है वहाँ का विरसा, गिद्धा, लोकगीत, बोलिया, टप्पे, वहाँ के तीज त्यौहार सबकी रुचि का विषय रहे हैं। प्रस्तावित शोध विषय में हम पंजाब की लोक बोलियों को नारीवादी दृष्टी से देखते हुए प्रगतिशील विचारधारा की लेखिका बख्श के द्वारा लिखी गयी बोलियों का नारीवादी विश्लेष्ण किया जाएगा। बख्श मूलत: पंजाबी लेखिका है। इनका लेखन अवतार सिंह संधू (पाश) की परंपरा का है। पाश का जीवन काल (09 सितम्बर 1950 - 23 मार्च 1988) जिन्हें सब पाश के नाम से जानते हैं। यह कवि और क्रांतिकारी थे। इनकी मुख्य काव्य रचनाएं- लोहकथा, उड्डदे बाजां मगर, साडे समियां विच (हमारे समय

में), लड़ागें साथी, खिल्लरे होए वर्के, जब जंजीरें टूटेंगी आदि। पाश ने अधिकतर लोक साहित्य को तरजीह दी और नक्सलवादी आंदोलन से जुड़े रहे। वे किसान जीवन के प्रसंगों को मार्क्सवादी ढांचे से जोड़ते हुए किसान व मजदूर वर्ग के हितों को लगातार आवाज देते रहे। 'पाश' ने कहा था **"मैं घास हूँ / तुम्हारे हर किए धरे पर उग जाऊंगा"।**[1] इस तरह पाश मौजूदा व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं और राज्य की साजिश को उजागर करते हैं। बख्श पाश की इसी परंपरा को आगे ले जाते हुए मेहनतकश जनता के दर्द को अपनी लेखनी में शामिल करती हैं। बख्श अपनी लेखनी के माध्यम से मेहनतकश स्त्री-पुरुष की पीड़ा को अभिव्यक्त करती हैं। बख्श के साहित्य के केंद्र में लोक है। संघा लंबे समय से कनाडा में प्रवासित जीवन जी रही हैं। कनाडा में रहते हुए वे लगातार लेखन से जुड़ी हुई हैं। कनाडा में'प्रोग्रेसिव पिपल ऑफ़ फाउंडेशन' से जुड़ी हुई हैं। इनका लेखन परंपरागत रीति-रिवाजों, चली आ रही नियमावली पर सवाल खड़ा करता है। उनके द्वारा लिखा गया काव्य, बोलियाँ, टप्पे, लोकगीत, नाटक आदि परंपरागत बोलियों, टप्पो, काव्य को कटघरे में खड़ा करती हैं। बख्श अपने साहित्य में स्त्री का पक्ष रखते हुए गिद्धाको जीवंत संस्कृति के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करती हैं। पंजाब में गिद्धाहर उत्सव पर किया जाता है जिसमें महिलाएं सास-बहु, ननद-भाभी, देवर–जेठ की ठिठोली के माध्यम से स्त्रियों के प्रति समाज के परंपरागत दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हुए कुछ इस तरह का संवाद पेश करती हैं-

- अज्ज असां सस कुटनी
  कुटनी संदुखां ओहले (स्मरणीय तथ्य)

(अर्थ- उपरोक्त लोक बोली परंपरागत है जिसमें कहा गया है, कि मैं आज सन्दूक की ओट में अपनी सास को पीटूँगी। यह परंपरागत दृष्टिकोण का हिस्सा है जिसमें सास को बहु की दुश्मन के रूप मे दिखाया गया है।)

लेकिन एक अन्य प्रसंग में बख्श पंजाब में व्याप्त दहेज प्रथा पर उंगली उठाते हुए लिखती है-

- आया सावन दिल परचावन
  साडे नैण झड़ीयां
  हाँणदीयां सभ नचण टपण

---

[1] चमन डॉ. लाल, (2000). *वर्तमान के रू-ब-रू पाश*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

चुप्प चुपेती खड़िया
कर्जा बाबल दा
दाज मेरे दीआं लड़ियाँ

(अर्थ- अर्थात सावन आया है, पर मेरी आँखों में आंसू की झाड़ियाँ हैं। मेरी सब सहेलियाँ नाच-गा रही हैं, मैं चुप-चाप खड़ी हूँ। बख्श की बोलियों की स्त्री उस दहेज प्रथा के खिलाफ आवाज बुलंद कर रही है जिसके चलते एक किसान कर्ज में डूब जाता है। ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि हरित क्रान्ति के बाद पंजाब में बढ़ते प्रवासन के कारण भी दहेज प्रथा को बढ़ावा मिला है।) बख्श इन तमाम प्रश्नों को अपनी लोक-बोलियों में प्रस्तुत करती हैं,उदाहरण के लिए-

- बाबले ने बार टोलयाहो वर टोलया,
  मुंडा टोलया खेत दा पाली
  उमरां दी खेती कर लईहाए खेती कर लई ,
  असीं रहे रिजकां तो खाली[2]

(अर्थ- पिता ने मेरे लिए एक वर तलाश किया है जो कि किसान है। उम्र भर खेतों में काम करने के बाद भी मेरा वर (पति) और मैं दो वक्त की रोटी के लिए तरस रहे है।)

बख्श की स्त्री पात्र, पति के साथ खेतों में काम करती है, उसके सरोकार एक किसान की आश्रित पत्नी के नहीं बल्कि साथ काम करने वाली स्त्री के सरोकार हैं।

बख्श की स्त्री पात्र समाज द्वारा बनाई गयी किसी भी नियमावली को अस्वीकार करते हुए अपने पति अथवा प्रेमी के साथ खड़ी दिखाई देती हैं। जिसमें वह समाज के तमाम रीती-रिवाजों पर सवाल करती हैं। जैसे- दहेज-प्रथा, बाल-विवाह, प्रवासी समस्या आदि की ओर इशारा करती हैं। वे परंपरागत सास-बहु के झगड़ों को झुठलाते हुए मजदूर अथवा श्रमिक वर्ग की समस्यायों को रेखांकित करती हैं। क्योंकि विश्व बाजार में स्त्री-पुरुष दोनों मजदूर हैं, दोनों की समस्याएं एक जैसी हैं। फिर लड़ाई भी एक ही है। संबंधों की मधुरता और सामाजिक कुरीतियों को रेखांकित करते हुए बख्श अपनी लोक-बोलियों में स्त्री पक्ष को

[2] बख्श, (2014). तुर चानण दी तौर. पटियाला: नवीं दुनिया पब्लिकेशन

रखती हैं। बख्श की साहित्य रचनाओं में उजागर स्त्री समस्याओं और उनके समाधानों को प्रस्तुत शोध में रेखांकित किया गया है।

साहित्यिक पुनरावलोकन:-

पंजाबी लोक साहित्य में भरपूर लेखन हुआ परन्तु इस शोध विषय से संबंधित जितनी भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध हो पाई है, उनके आधार पर शोध विषय के मुख्य बिन्दुओं पर बात हुई है। लेकिन फिर भी कुछ पुस्तकें काफी हद तक इस शोध को गहराई तक पहुँचनें में काफी सहायक रही है। जिसकी मदद से पंजाब की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियों को स्पष्ट रूप से देखा गया है। शोध विषय से संबंधित उपलब्ध सामग्री का अध्ययन व संदर्भ ग्रहण किया गया है। इसके अलावा बख्श की पुस्तकों 'तुर चानण दी तौर','माँ धी दा संवाद',सुण नीं कुड़िये जीयुण जोगिए' आदि को इस शोध में प्रमुखता से शामिल किया गया है।

प्रस्तुत शोध विषय के अंतर्गत साहित्यिक पुनरावलोकन के अंतर्गत उपलब्ध निम्नलिखित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं को शामिल किया गया है-

बख्श ने अपनी पुस्तक 'माँ धी दा संवाद' में ऐसी स्त्री पात्रों को प्रस्तुत किया है, जो जीवन की विपरीत परिस्थितियों से वाकिफ होने के बावजूद आगे आकर अपना हक हासिल करने का दम रखती हैं। बख्श ऐसी लेखिका हैं, जो कभी भी अपने स्त्री पात्रों को दीन-हीन या कमजोर रूप में प्रस्तुत नहीं करती। क्योंकि इनकी रचना 'माँ धी दा संवाद' कहने को तो माँ-बेटी के बीच के संवाद पर आधारित हैं, किन्तु उनके बहाने से यह दो पीढ़ियों के बीच का द्वंद्व है, परंपरागत विचारों से आधुनिक विचारों की जंग है, साथ ही स्त्रियों के हक की आवाज है और समाज का आईना है। इस कृति में माँ आगे बढ़ने की सोच रखने वाली, अपने रास्ते खुद खोजने वाली बेटी को सामाजिक कुरूपताओं, रीति-रिवाजों का डर दिखाती है, परंतु बेटी हर सवाल का जवाब तर्क के साथ देती हुई कहती है कि जो अधिकार पुरूषों को प्राप्त हैं वही अधिकार औरतों के भी हैं। वर्तमान पीढ़ी स्त्री-पुरुष समानता की ओर अग्रसर हो रही है परन्तु अभी भी समाज का एक बहुत बड़ा तबका पुरुषसत्तात्मक विचारों से मुक्त नहीं हो सका है, जैसे गुरु

साहिबानों के बोल में भी इस तरह के अनेकों उदाहरण जिनमें स्त्रियों को सम्मान और समानता की बातें कही गयी मिल जाएँगी, जैसे- "सो कोई मंदा आखियों, जीत जमे राजान"। परंतु ये सब बातें कथा-कहानियों तक ही सीमित रह गयी हैं। सच्चाई इससे कोसो दूर है। यथार्थ यह है कि आज 21 वीं सदी में भी स्त्रियों को धर्म के ठेकेदार श्री दरबार साहिब में कीर्तन तक करने की इजाजत नहीं देते। जिस धर्म में स्त्रियों को नैतिकता की दुहाई देकर कई-कई दायरों में बांध दिया जाता है, उसी धर्म से उन्हें दूर भी रखा जाता है। ऐसी झूठी समानता के न जाने कितने जाल स्त्रियों को परतंत्र करने के लिए पुरुषवादी समाज ने बुने हुए हैं, जिसकी गांठे बख्श अपने साहित्य में खोलती नजर आती हैं-[3]

- नी धीऐ नी भोलिये धिऐ
  ना बीच कचेरी दलील कुड़े
  मुदतों से ही औरत जंग पे
  होती रही जलील कुड़े [4]

लेखिका ने आगे भी बहुत सी सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य किए हैं। कन्या भ्रूण-हत्या, दहेज-प्रथा, बाल-विवाह, श्रम, प्रवास आदि तमाम समस्याओं पर सवाल खड़ा करती हैं। आज के इस तकनीकी युग में स्त्रियों की दशा ऊपरी तौर पर देखने से कई मायनों में सुधरी हुई प्रतीत होती है, किन्तु सच्चाई कुछ ओर है। जिन तकनीकों का इस्तेमाल विकास के नाम पर हो रहा है वह दरअसल शोषण के नए हथियार बनकर सामने आ रहे हैं। पहले भी बेटियों की हत्याएं होती थी परन्तु पैदा होने के बाद पर आज-कल हाई टेक्नोलॉजी (उच्च तकनीक) के चलते पेट में ही उनकी हत्या कर दी जाती है। क्या यही है विकास ? क्या यही है आधुनिकता ? इन्हीं सब प्रश्नों से जूझते हुए बख्श लिखती हैं-

- नी माएं नी मेरीये माएं
  ठिकाना लबदी रह गई नी
  जग नु चानण करन वाली
  आप अंधेरे में बैठ गई नी [5]

---

[3] बख्श, (2013). माँ धी दा संवाद,.पटियाला: नवीं दुनिया पब्लिकेशन

[4] वही

[5] वही

'माँ-धी दा संवाद' में लेखिका ने उस सच को भी बड़ी ही बेबाकी से उभारा है जिससे हम नजरें चुराते हैं। उस कड़वे सच को हमने ही तो खड़ा किया हैं। आज भी स्त्रियों को केवल एक देह के रूप में ही स्वीकारा जाता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के लिए वह केवल एक भोग्य वस्तु है। यह व्यवस्था इतनी भयावह है कि इसमें इसी के द्वारा बनाये गए रिश्तों को ताक पर रखा जाता रहा है। शोषण की इस लम्बी दास्तां की परते बहुत दर्द भरी हैं, जिनमें दादा, पिता, भाई, चाचा, मामा आदि इन रिश्तों के खोल से बाहर आकर केवल एक पुरुष बन जाते हैं और अपने ही घर में यौन शोषण करते हैं। लेखिका ने अपने साहित्य में समाज की इन्हीं दबी-ढकी परतों को खोला है। जहाँ बख्श एक सामाजिक चिंतक के रूप में दिखाई देती हैं वहीं वे औरतों के हक की पहरेदार भी बन जाती हैं। झूठी रिवायतों को तोड़ने वाली दिलेर, सही को सही और गलत को गलत कहने वाली, अपना हक मांगने वाली स्त्री नजर आती हैं। वह अपनी दलीलों से सियासत की कारगुजारी पर प्रश्न-चिन्ह भी लगाती हैं।

2007 में आई बख्स की पुस्तक 'सुण नीं कुड़िये जीयुण' में लेखिका ने सामाजिक बदलावों के लिए जूझ रहे लोगों के बारे में लिखा है। बख्श की राजनीतिक चेतना वैचारिक हथियार जैसी है। लेखिका बड़ी ही स्पष्टता और दृढ़ता के साथ अपने विचार पेश करती हैं। मुख्यधारा के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक ढांचे को एक खास नजरिये के साथ देखती हैं और हालातों का मूल्याकंन करती हैं साथ में ही सुझाव पेश करती हैं। स्त्री-पुरुष के समान अधिकार की बात के साथ-साथ सम्पूर्ण मनुष्य जाति की मुक्ति की बात करती हैं। बख्श की रचनाओं की खूबसूरती यह है कि वे समाज के मनोभावों को अपनी साहित्य रचनाओं के माध्यम से व्यक्त करती हैं। बख्श की पुस्तकों का काव्य- बोलियाँ, टप्पे के रूप में हैं जिसमें चार-पाँच पंक्तियों की तुकबंदी होती है। इनकी काव्य रचनाओं में लोकधारा जैसी सहजता है। ये किसी खास उद्देश्य के साथ ही काव्य को सृजति हैं। इस पुस्तक में लेखिका ने लहू-मास और मायके, स्त्री-पुरुष, सास-बहु और ससुराल के संबंधों, साधू-डेरे, किसानों, नशे, देहज, प्रवास और सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक हालातों से संबंधित लोक बोलियाँ एवं टप्पों की रचना की है।[6]

'कुलबंत सिंह' अलोख ने अपनी पुस्तक "लोकगीतां दियां सरियाँ " नाम इसलिए रखा कि 'सरियाँ' पद का प्रयोग लड़ीयों के अर्थो में किया है। सरियाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी निरंतर प्रभावशाली होने का प्रतीक है। अलोख ने इसमें लोकगीतों को बहुत परिश्रम के साथ खोजा तथा लिपिबद्ध किया है। इन्होंने

---

[6] बख्श, (2007). सुण नीं कुड़िये जीयुण. पटियाला: नवीं दुनिया पब्लिकेशन

अपने लोकगीतों में स्त्रियों के योगदान को प्रस्तुत किया है साथ ही उन्होंने इस संकलन की भूमिका 'मेरी माँ अभी जीवित है' शीर्षक से लिखी है। माँ इनके लिए एक ऐसा कवच है जो उसे जीवन के हर दुःख, पीड़ा से महफूज रखता है। इनके यहाँ माँ ही लोक से सम्बन्ध निर्मित करने वाली आधार है क्योंकि वही लोकगीतों की जननी है और इन गीतों की गायिका, संरक्षिका भी वही है। लेखक ने इस भूमिका के माध्यम से स्त्री के हर रूप और उसके भिन्न-भिन्न योगदान को उजागर किया है। एक तरह से यह पुस्तक पंजाब के इतिहास, धर्म और संस्कृति का दस्तावेज है। इन्होनें अपनी धारणाओं को तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया है।[7]

लेख पंजाबी किस्साकार और नारी लेख में लेखक ने बताया कि किस्साकार अपने समय की जमींदारी प्रथा में स्त्रियों का इस्तेमाल किस तरह से करते थे। वे जैसे पैदावार के साधनों को अपनी मलकियत समझते थे और उसे ऐशो-आराम का साधन बना कर प्रयोग करते थे उसी प्रकार वे स्त्री पर अपना मालिकाना हक जताते थे। वह अपनी कमजोरियों को छिपाकर स्त्रियों पर ही सारे दोष मढ़ देते थे। स्त्री के रूप आकर्षण का ही महत्त्व हुआ करता था। उनकी सारी काबिलियत उनकी खूबसूरती से आंकी जाती थी और यही सोच उनके शोषण का सबसे बड़ा कारण था।

स्त्री-पुरूष बराबरी की कल्पना भी इस समाज को चुभती है। इस लेख में किस्साकार लिखते हैं कि पंजाबी काव्य में स्त्री के लिए आदर-सत्कार है, परंतु सामाजिक नियमों का उलंघन किसी को भी स्वीकार्य नहीं। लेखक दमोदर का उदाहरण देते हुए लिखते हैं कि जब लोगों को हीर का चाक (जाति) राँझा के साथ बने संबंधो का पता चला तो जैसे-पानी की एक शांत लहर में एक हलचल पैदा हो गई। किस्साकारों द्वारा लिखे काव्य में अधिकतर स्त्री की निंदा ही की गई है। जैसे- लगता है कि कवि का अपना दृष्टिकोण नहीं बल्कि यह समय और समाज की राय है। जैसे-मूकबल किस्साकार राँझे के मुँह से ही 'हीर' यानि स्त्री जाति की निंदा करवाता है।

अंत में एक बात तो साफ है कि किस्साकारों द्वारा किया गया स्त्री-विरोध उनके माध्यम से वह सामाजिक संरचना करवाती है जिसमें ये किस्साकर जी रहे थे जिसका असर साहित्यिक कृतियों पर भी पड़ता रहा है।

---

[7] कुलबंत सिंह अलोख. (2003). लोकगीतां दियां सरियाँ. अमृतसर: वारिश शाह फाउंडेशन

'पाश' ने अपनी पुस्तक 'जब जंजीरे टूटेंगी' में जंजीरों के टूटने को गुलामी को तोड़ने का प्रतीक माना हैं। पाश पंजाबी भाषा के साथ-साथ हिंदी के भी लोकप्रिय कवि हैं। इस पुस्तक का मूल तत्त्व राजननैतिक, आर्थिक, सामाजिक स्तर पर बराबरी को स्थापित करना है। पाश अपने काव्य में शोषितों की मुक्ति की कामना करते हैं उनका मानना था कि जब तक राजनैतिक स्तर पर बराबरी नहीं होगी तब तक आर्थिक और सामाजिक स्तर पर बराबरी नहीं आ सकती। कविता की पहली ही पंक्ति में कवि कुएं के रूपक द्वारा ऐसे विचारों को रूपायित करते हैं- *कुएं अब बहुत थोड़े बचे हैं लेकिन वे बिल्कुल अकेले से जहाँ भी हैं /अंधरे में सुर नहीं है / जो भी प्यास के बहाने उतरता है /मौत भर देते हैं /सबसे भोले भाले पंछियों के अंडों में (बीच का रास्ता नहीं होता)*[8]

शोध प्रश्न:- इस शोध विषय से सम्बन्धित जितनी भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध हुई उसी के आधार पर निम्न शोध प्रश्नों का चयन किया गया है

(1) पंजाबी काव्य में बदलते हुए लोक स्वर क्या हैं ?
(2) बख्श का साहित्यिक योगदान क्या है ?
(3) बख्श की काव्य रचनाओं में कौन-से स्त्री मुद्दे तथा जेंडरप्रश्न हैं ?
(4) बख्स की काव्य रचनाओं में दो परिवेशों का सम्मिश्रण-पंजाबी तथा प्रवासी स्त्री ?

शोध का उद्देश्य:- इस शोध का मुख्य उद्देश्य यही रहा है कि शोध समस्या की छान-बीन करके उसे बारीकी से समझा जा सके है और सभी पक्षों को उजागर करने का सफल प्रयास रहा है-

(1)पंजाबी संस्कृति का नारीवादी आंकलन करना।
(2) पंजाबी साहित्य के बदलते हुए लोक स्वरों का अध्ययन करना।
(3) बख्श के साहित्यिक योगदान का अध्ययन करना।
(4) बख्श की काव्य रचनाओं में नारी अथवा जेंडर प्रश्नों का अध्ययन करना।
(5) बख्श की काव्य रचनाओं में प्रवासी स्त्री के अनुभव का अध्ययन करना।

---

[8] पाश, (2002). जब जंजीरे टूटेंगी. मेरठ: संवाद प्रकाशन